कुल पृष्ठ संख्या-24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) .....

.....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

.....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 14/3/2020

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक | | | | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

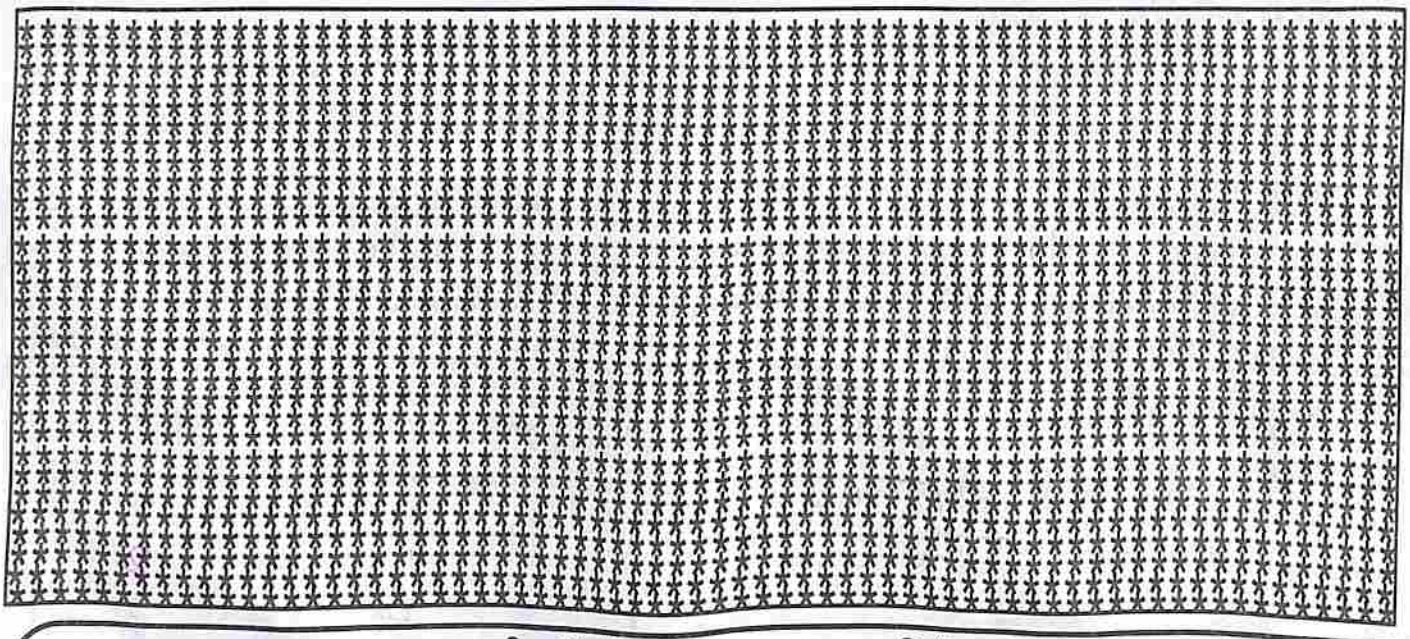

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होनें पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. विशेषण → ~~संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से~~ जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि सम्बन्धी विशेषता प्रकट करते है, उन्हे 'विशेषण' कहते है।

उदा० – (i) राम अच्छा लडका है।

विशेषण के भेद (दो)

- गुणवाचक वि.
- संख्यावाचक वि.

10. वाक्य ⇒ प्रशान्त खेल रहा है।

(i) कारक → कर्ता कारक

(ii) काल → वर्तमान काल

(iii) वाच्य → कर्तृवाच्य

13. मुहावरे

(क) आसमान सर पर उठाना – बहुत शोर मचाना।

(ख) ओखली में सिर देना – जानबूझ कर संकट मोल लेना।

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11. द्वन्द्व समास → समास का वह रूप जिसमें दोनो पद समान रूप से प्रधान हो तथा आपस में 'योजक चिन्ह' द्वारा जुड़े हो, उसे 'द्वन्द्व समास' कहते है।

उदा. - लाभ-हानि → लाभ या हानि
रात-दिन - रात और दिन

* द्वन्द्व समास मे समस्त पद का विग्रह करते समय 'और, या, तथा' आदि शब्दो का प्रयोग करते है।

14. लोकोक्ति - पोल मुँह बडी बात

अर्थ → सामर्थ्य से अधिक डींग हाँकना

18. सूर्योदय व सूर्यास्त की भूमि

पाठ 'आखिरी चट्टान' में सूर्योदय व सूर्यास्त की भूमि 'कन्याकुमारी' को बताया गया है।

25. ऋतु-वर्णन ⇒ ऋतु वर्णन कविता के रचयिता का नाम सैनापति है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-165/2019

Q9. (i)

कवि परिचय :

महाकवि तुलसीदास

" सूर-सूर तुलसी शशि उडुगन केसवदास
अब कवि खद्योत सम जँह तह करत प्रकास ॥ "

जन्म → रामभक्तिकाव्यधारा के अमर दीप महाकवि तुलसीदास का जन्म उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में 1532 ई. में हुआ।

पिता - आत्माराम
माता - हुलसी देवी

कष्टपूर्ण जीवन - अभुक्त मूल नक्षत्र में जन्म लेने के कारण इन्हे माता पिता ने त्याग दिया। इन्होने कहा है -

" मातु पिता जग जाय तज्यो,
विधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई "

गुरु नरहरिदास → महाकवि तुलसीदास रामबोला के रूप में भटकते रहे तब इन्हे गुरु नरहरिदास की शरण प्राप्त हुई तथा वे राम भक्ति की ओर उन्मुख हो गये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

साहित्यिक परिचय → महाकवि तुलसीदास जी ने भगवान श्री राम के प्रति अनन्य भाव से भक्ति की है। उनकी भक्ति भावना का मूल लोक मंगल व लोक भावना रहा है। उनकी रचनाओं से उनका अवधी भाषा पर अधिकार सिद्ध होता है।

प्रमुख कृतियाँ

- अवधी
  - बरवै रामायण
  - वैराग्य संदीपनी
  - जानकी मंगल
  - पार्वती मंगल
  - रामाज्ञा प्रश्नावली
  - रामचरितमानस
- ब्रज
  - विनयपत्रिका
  - दोहावली
  - गीतावली
  - कृष्ण गीतावली

मृत्यु → महाकवि तुलसीदास की मृत्यु 1623 ई. (1680 संवत) में हुई। उनकी मृत्यु के संबंध में निम्न दोहा प्रचलित है :-

"संवत सोलह सो असी, असी गंग के तीर
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर"

BSER-16/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii)

लेखक परिचय :

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

जन्म :- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का जन्म 1850 ई. में काशी में हुआ। इनके पिता का नाम गोपालचन्द्र था जो कि स्वयं हिन्दी के एक अच्छे लेखक थे।

सुधारवाद :- अपने पिता की मृत्यु के पश्चात भारतेन्दु जी ने अपनी विपुल सम्पति गरीबो में व लोक मंगल में लगा दी। उन्होंने बनारस में हरिश्चन्द्र कॉलेज की स्थापना की।

उपाधि :- अपने सुधारवाद व साहित्य सेवा के कारण लोगो ने उन्हे 'भारतेन्दु' की उपाधि से सुशोभित किया।

साहित्यक परिचय :-

① भारतेन्दु जी को वर्तमान हिन्दी गद्य का प्रवर्तक कहा जाता है।

② उन्हे प्राचीन व नवीन का सामंजस्य उनकी विशेषता रही है।

③ उन्होंने अपनी रचनाओ में तत्सम तद्भव शब्दो व व्यंग्य का तालमेल बैठाया है।

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रमुख कृतियाँ - भारतेन्दु जी ने अपनी अल्प आयु में लगभग 175 ग्रन्थ लिखे हैं। उनकी कुछ कृतियाँ निम्न हैं -

मैगजीन - हरिश्चन्द्र मैगजीन, कविवचन सुधा

नाटक - वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, अंधेर नगरी, सत्य हरिश्चन्द्र, चन्द्रावली नाटिका, भारत दुर्दशा, नीलगाम आदि।

मृत्यु - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी की मृत्यु क्षय रोग से ग्रसित होने के कारण 1885 ई. में हुई।

20. **राजहंस** :- 'कवे हपाराम खिडिया ने राज्यिया रा सोरम' में उनके नीतिपरक बातो का समावेश किया है। उनही सोरठो में एक के अनुसार राजहंस नीरक्षीर है - विवेकशील मनुष्यो का क्योंकि जिस प्रकार दूध व जल के मिश्रण से केवल दूध अलग कर सकता है, उसी प्रकार विवेकशील मनुष्य इस संसार में सही व गलत व्यवहार को तुरंत समझ कर सही बातो को ग्रहण करता है।

क द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8.

बोहरा बुक स्टोर, देवासी

पत्रांक - बो॰ बु॰ स्टे॰ २०२०/२०१/१०५
दिनांक - 14.03.2020

प्रेषक
प्रबन्धक
बोहरा बुक स्टोर
देवासी।

प्रेषित
व्यवस्थापक
मोहन राघव प्रकाशन
नई दिल्ली।

विषय - पुस्तकें मँगवाने हेतु।

महोदय,

हमने तीन वर्ष पूर्व पुस्तकों का व्यापार प्रारम्भ किया था। विगत तीन वर्षों से हमारे व्यापार में प्रगति हो रही है। हमने आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की लोकप्रियता व श्रेष्ठता के विषय में काफी सुना है। अतः हम आपसे कुछ पुस्तकें मंगवाना चाहते है।

अतः आप नीचे लिखी पुस्तकों की सूची में लिखी पुस्तकों के मूल्य तथा व्यापार शर्तों के साथ भिजवा दें -

BSER-105/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

क्र. स.	पुस्तक का नाम	संख्या
1.	कामायनी	50 प्रतियाँ
२.	शुद्ध कविता की खोज	80 प्रतियाँ
3.	अर्द्धनारीश्वर	50 प्रतियाँ
५.	वीर सतसई	50 प्रतियाँ

अतः आपसे अनुरोध है कि उक्त पुस्तकें शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।

भवदीय,
बोहरा बुक स्टोर के लिए
अनुक्रमांक - 1103976

१६. कवि देव के आराध्य भगवान कृष्ण है।

19. 'संदेसनि मधुबन कूप भरे' पंक्ति के अनुसार कुब्जा को संदेसो से 'भगवान श्री कृष्ण' ने भर दिए है। गोपियाँ कहती है उन्होंने ब्रज से मथुरा जाते समय हर यात्री के हाथ पत्र भिजवाए थे किन्तु श्री कृष्ण ने उपेक्षा कर उन पत्रो को कुओ में फिकवा दिया जिससे अब तक सब मथुरा के सारे कुएँ भर गए होंगे।

क द्वारा प्रश्न
त्त अंक संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

15. पद्यांश व्याख्या

उषा की - - - - - - - - - - अपलक कवि

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के 'उषा की लाली' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इस कविता के कवि 'नागार्जुन' है।

प्रसंग → इस अवतरण में कवि ने सूर्योदय का एक अत्यंत मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया है।

व्याख्या → कवि नागार्जुन प्रातः काल में सूर्योदय के समय की मनमोहक व रमणीय प्राकृतिक दृश्यों व प्रकृति की सुन्दरता का वर्णन करते हैं कि प्रातः काल की लालिमा में प्रकृति का चित्र अत्यंत मनोरम लग रहा है। यद्यपि अभी सूर्योदय नहीं हुआ है फिर भी चोटियों पर हिम से मंडित सिंदूर पर्वत उसका स्वागत कर रहे हैं। वन बर्फ से ढकी शिखर पर जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है तो वे सोने (कनक) के समान सुनहले रंग का प्रतीत होते हैं। सूर्योदय के समय स्वर्ण शिशु के समान काफी छोटा होता है तथा वे लगातर

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सूर्योदय का सकाश फैलाने हेतु अपना आकार बड़ा करता है। बस सकार प्रातः काल का दृश्य लगातार बदलता जा रहा है। बस तीव्र गति से बदलते परिदृश्य को देखकर कवि अचंभित हो रहा है। प्रकृति अपनी सुंदरता का अमृत बिखेर रही है। कवि उसे देखकर काफी प्रसन्न हो रहा है।

विशेष :

कला पक्ष

① **भाषा** → पद्यांश की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है जिसमें तत्सम तद्भव शब्दावली का सुन्दर समायोजन किया है।
② **छंद** → छंदमुक्त रचना है।
③ **शैली** → पद्यांश की शैली चित्रात्मक है।
④ **अलंकार** → 'शिशु-रवि' में रूपक अलंकार व कनक-शिखर में भी रूपक अलंकार है।

भाव पक्ष

① कवि ने प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व सौन्दर्य का अपनी प्रतिभा से सजीव चित्रण किया है।

क द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अपठित पद्यांश

4. **शीर्षक** → पुरानी व नई राह

5. धूलो की राह (अर्थात् वीरता का रास्ता) अद्भुती रह जाती है।

6. 'धूलो की राह' को नई माना गया है क्योंकि अब लोग सुखदायक जीवन जीने की नहीं सोच रहे बल्कि वे वीरता से दुश्मनो का मुकाबला करने हेतु अस्त्र शस्त्र धारण कर अपने जीवन को मातृभूमि के लिए भेंट चढ़ाना चाहते हैं।

---

8. **हामिद** ने मेले से 'चिमटा' खरीदा। प्रारम्भ मे दुकानदार ने उसकी कीमत छह पैसे बतीय बतायी, किन्तु हामिद ने अपनी चतुरता से उसे 'तीन पैसे' में खरीद लिया।

---

9. 'प्रकृति पद्मिनी के अंशुमाली' क में अंशुमाली शब्द 'ईश्वर' के लिए आया है, क्योंकि वह ईश्वर ही सूर्य के समान इस कमल रूपी प्रकृति को खिला कर उसका रूप संवार रहे हैं तथा उसकी देखभाल कर रहे हैं।
वे ही इस प्रकृति के प्रमुख पोषणकर्ता हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या
	16

परीक्षार्थी उत्तर

प्रसंग व्याख्या 'गद्यांश'

अत्रि की - - - - - - - - चाहते हैं।
~~चाहते हैं।~~

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज' के स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन शीर्षक पाठ से लिया गया है। यह पाठ 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' जी द्वारा रचित है।

प्रसंग - इस अवतरण में लेखक स्त्री शिक्षा के समर्थन में कुछ व्यंग्यात्मक शब्दों का प्रयोग करते हैं।

व्याख्या - लेखक लिखते हैं कि प्राचीन काल में भी स्त्रियों को पढ़ने की परंपरा थी। उस समय भी अनेक विदुषियाँ थी। उदाहरणार्थ महर्षि अत्रि की पत्नी अपना व्याख्यान देते समय हांतो तक अपना ज्ञान प्रकट करती थी व गार्गी बड़े-बड़े ज्ञानियों को ज्ञान में हरा देती। मंडन मिश्र की पत्नी अपने ज्ञान से शंकराचार्य जी को हरा देती। क्या इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है। लेखक व्यंग्य कसते हुए कहते हैं कि यह सब पढ़ने के ही दुष्परिणाम

है। अगर स्त्रियों को पढ़ाया ही नहीं जाता तो वे उन महान ऋषियों का मुकाबला नहीं कर पाती। यह सब कुछ स्त्रियों को पढ़ाने का ही बुरा परिणाम है।
स्त्रियों के लिए पढ़ना कलंक व पुरुषों के लिए 'सम्मान की बात'। ऐसी ऊटपटांग दलीलों के आधार पर ही कुछ लोग स्त्रियों को अनपढ़ रखकर भारत का गर्व बनाना चाहते हैं। यह इस तरह करना असंभव है।

विशेष :

① ~~घघांश~~ गद्यांश की भाषा सरल, सरल तथा व्यंग्यात्मक है।
② 'कालकूट' तथा 'पीयूष का घूँट' जैसे सटीक शब्दों का प्रयोग किया गया है।
③ लेखक ने विदुषियों के उदाहरण देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया है।

---

१२. 'अमर शहीद' एकांकी के अनुसार सागरमल गोपा को बेदी जैसल निम्न कारणों से बनाया गया -

(i) उसने जैसलमेर में हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई।
(ii) उसने 'रघुनाथ सिंह का मुकदमा' व 'जैसलमेर का गुंडा राज' नामक पुस्तक लिखकर जनता को सजग किया।
(iii) उसने जवाहर लाल नेहरू व अन्य नेताओं को गुप्त पत्र भेजे।
(iv) उसने "सामंती अत्याचारों" के विरुद्ध जन जागृति फैलायी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अपठित गद्यांश

१) शीर्षक - सगुण व निर्गुण भक्ति

२) निर्गुण ब्रह्म की विशेषताएँ

① निर्गुण ब्रह्म में परमात्मा को निराकार, अजन्म, अनादि सर्वव्यापी आदि माना जाता है।

② यह परमात्मा का कोई रूप नहीं बताता व सम्पूर्ण भारतीय समाज को एक रूप में पिरोता है।

३.

~~निर्गुण~~ भक्त कवि सगुण	~~सगुण~~ भक्त कवि निर्गुण
(i) सगुण भक्त कवि परमात्मा को सगुण, साकार मानकर उनकी पूजा करते हैं।	(i) निर्गुण भक्त कवि ईश्वर को निराकार मानकर उनकी विवेचना करते हैं।
(ii) उन्होंने हिन्दू समाज के विभिन्न विघटनों को समाप्त किया।	(ii) उन्होंने हिन्दू व मुसलमान का भेद भुलाकर मानवता के मूल्यों की स्थापना की।

१२. वाक्य शुद्धीकरण

(क) रमेश की तो माँ मर गई है।

(ख) घर में सब कुशल है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

18. संत दादू दयाल का जीवन चरित्र

संत दादू दयाल का जन्म संवत 1601 में माना जाता है। दादू पंथियों के अनुसार वे अहमदाबाद के निकट साबरमती नदी में बहते हुए पाये गये थे। इस प्रकार दादू जी का जन्म का प्रारम्भिक जीवन कष्टदायक था। संत दादू दयाल प्रमुख संत तथा समाज सुधारक के रूप में समाज में विख्यात है।

दारिद्र स्थिति :- दादू दयाल काफी गरीब थे किन्तु उन्होंने कभी इसका पर्दा प्रकट नहीं किया। उन्होंने कहा है -

दादू रोजी राम है, राजिक रिजक हमार
दादू उस प्रसाद से पोष्या सब परिवार

जात-पात में अविश्वास :- दादू जात-पात में विश्वास नहीं करते थे। उनके अनुसार सभी मनुष्य ईश्वर की संतान है।

हिंसा विरोधी :- दादू ने कहा कि हिंसा से दूर रहो। उन्होंने कहा - कि जीवमात्र का शिकार मत करो।

निंदा-स्तुति में समभाव :- दादू ने अपने शिष्यों को परनिंदा न करने की सलाह

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर | परीक्षक प्रदत्त

दी है। उन्होंने कहा -

दादू निंदा ताकौं भावे
जाके हिरदे रस ना आवै।

पंचतीर्थ - दादू ने अपने जीवनकाल में कई यात्राएँ की। उनके निवास व उपदेश स्थली के रूप में पाँच स्थल प्रमुख है -

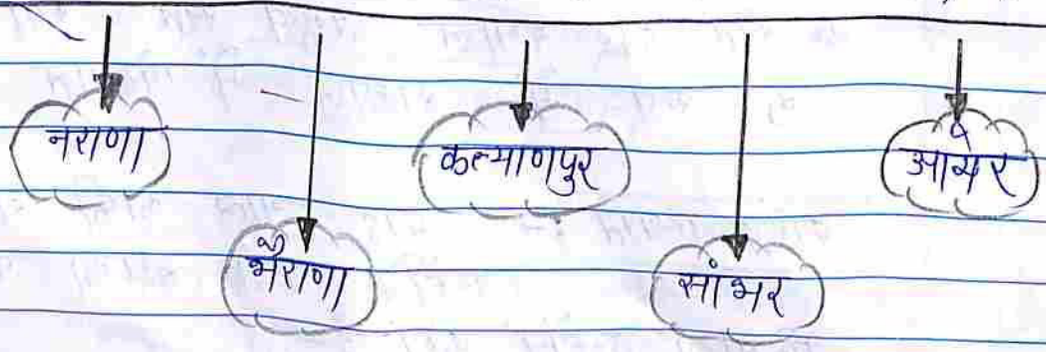

इस तरह संत दादू दयाल का जीवन काफी प्रेरणादायी है।

23. ईर्ष्या से बचाव के उपाय :- ईर्ष्या से बचाव के लेखक ने यह उपाय बताया है कि 'नीत्से के विचार' को अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा है कि- 'भीड़भाड़ वाले स्थानों को छोड़कर एकांत की ओर भागो।' अतः ईर्ष्या से बचाव का उपाय है कि हमें ईर्ष्यालु लोगों के साथ नहीं रहना चाहिए बल्कि उनसे अलग होकर अच्छे कार्य करने चाहिए।

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

17. **कन्यादान कविता की मूल संवेदना**

कविता 'कन्यादान' 'ऋतुराज' द्वारा रचित एक संवेदनशील कविता है।
इस कविता में एक माँ अपनी पुत्री का विवाह करते समय उसे अपनी अंतिम पूंजी मानकर ससुराल में होने वाले कुछ व्यवहारो की सीख दे रही है।
माँ अपने जीवन से प्राप्त अनुभवो को आधार बनाकर बेटी को कुछ शिक्षाएँ देती है जो :-

(i) चेहरे पर मत रीझना - माँ बेटी को कहती है कि तुम अपने ससुराल जाकर अपनी सुन्दरता पर अभिमान मत करना क्योंकि यह किसी के मन मे ईर्ष्या उत्पन कर सकता है।

(ii) वस्त्र व आभूषण पर लोभित मत होना - माँ पुत्री को यह भी शिक्षा देती है कि तुम्हे ससुराल से वस्त्र व गहने मिलेंगे किन्तु वे शाब्दिक भ्रमो की तरह है, वे तुम्हारी अस्मिता समाप्त कर देंगे अतः उन पर मत लुभाना।

(iii) आत्मदाह मत करना - माँ कहती है कि जिस आग पर रोटियाँ सेकी जाती है, तुम

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

अनैतिक आचरण होने पर उसपर कुछ
दृढ़ कर आत्मदाह मत करना।
साहस से परिस्थितियों का मुकाबला
करना।

(iv) कोमलता बनाए रखना पर कमजोरी नहीं :-

माँ ने कहा 'लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना' अर्थात् तुम महिलाओं के समान कोमलता रखना पर अनैतिक व्यवहार होने पर कमजोर मत बनना।

अतः यह कविता ससुराल में स्त्रियों के साथ होने वाले दुराचरण को अभिव्यक्त कर उससे घबराने नहीं व साहस के साथ सामना करने की शिक्षा दी है।

१५. मानव शरीर के विषय में लोकसंत पीपा के विचार है कि यह शरीर पंचतत्वों से मिलकर बना है। वह इसी में मिल जाएगा। इस शरीर में ही परमात्मा का निवास होता है, कहीं बाहरी दुनिया में नहीं। अतः सच्चे मन से ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिए। यह शरीर ईश्वर का बनाया हुआ है तथा वे ही इसे समाप्त भी करते हैं।

रा | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

7. निबन्ध : बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

रूपरेखा :
① प्रस्तावना : बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ की अवधारणा
② लिंगानुपात कम होने के कारण
③ कन्या भ्रूण हत्या रोकने के उपाय
④ स्त्री-शिक्षा का महत्व व उपाय
⑤ उपसंहार

(i) प्रस्तावना :- बेटी बचाओ : बेटी पढ़ाओ भारत सरकार द्वारा चलायी गए एक ~~सु~~ बहुत ही सामंगल नीति है जो कि समाज में स्त्री जन्म को प्रोत्साहन देने हेतु बनायी गयी है।
हमारे देश में बहुत से ऐसे लोग है, जो स्त्री शिक्षा व उसके जन्म को अभिशाप मानते है। तथा माता की कोख में ही उसकी हत्या करा देते है।
अतः यह कार्यक्रम ऐसे लोगो को ध्यान कर उन्हे बालिका जन्म को प्रोत्साहन देना है।

जिस बेटी से चमक रही है यह धरती
कभी वो कोख में मरती कभी दहेज के बलि चढ़ती

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) **लिंगानुपात कम होने के कारण** :- हमारे देश में लिंगानुपात काफी कम है। लिंगानुपात का अर्थ - प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या भारत की ~~एगा~~ की जनगणना के अनुसार भारत में लिंगानुपात 940 ही है। अर्थात् प्रतिहजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या केवल 940 ही है। यह काफी शर्म व चिंता का विषय है।

प्रमुख कारण

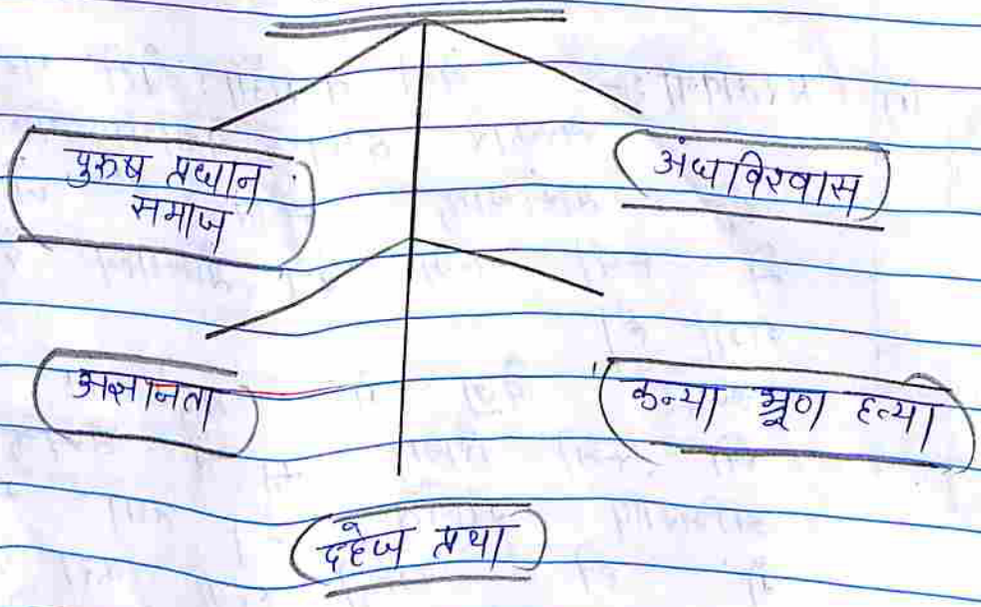

यह लिंगानुपात कम होना एक बहुत बड़ी चिंता का विषय है।

" मरवा दिया बेटी को जिसने पत्नी की कोख में
कन्या ढूंढने निकला है, वो नवरात्रे के भोज में

BSER-165/2019

द्वारा चेक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(iii) कन्या भ्रूण हत्या रोकने के उपाय :

कन्याभ्रूण हत्या एक भयंकर समस्या है। जिसे हम प्रायः देखा जाता है। लोग कन्या को पराया धन मानकर व लड़को से कम समझकर कोख में ही मरवा देते हैं।

इस पाप से लोग जरा भी नहीं घबराते हैं। अतः भारत सरकार ने बेटी बचाओ व बेटी पढ़ाओ के माध्यम से उन लोगो को कठोर सबक सिखाकर उन्हे कन्या भ्रूण हत्या करने से रोकने के लिए एक अभियान चलाया है।

यह निम्न उपायो से कम हो सकती है:-

① लोगो में कन्या जन्म को लेकर जागृति फैलाना।

② उनके अंधविश्वास व अज्ञानता को दूर करके

③ शिक्षा द्वारा उन्मूलन द्वारा इसे काफी कम किया जा सकता है।

④ महिलाओ के लिए तथा बालिकाओ के लिए चलाई जा रही योजनाओ से उन्हे अवगत करना।

"बहुत सरल है पेट में करना मुझ पर वार
हिम्मत है तो माँ मुझे पैदा करके मार"

BSER-165/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) स्त्री - शिक्षा का महत्व व उपाय :- स्त्री शिक्षा देश के विकास तथा उनकी बालिकाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार करने हेतु एक बहुत आवश्यक कारक है। हमें यह बात समझनी आवश्यक है।

स्त्री शिक्षा का महत्व समझना बहुत आवश्यक है। प्राचीन काल में भी कई विदुषी स्त्रियाँ थी, उनमे गार्गी, मैत्रेयी, लीला, विज्जा आदि प्रमुख है। स्त्री शिक्षा को अनर्थ नही मानकर उसे बढ़ाने की जरूरत है। स्त्री शिक्षा हेतु कई योजनाएँ चलाई जा रही है।

दिवनारायण छात्रा स्कूटी वितरण योजना	⟷ गार्गी पुरस्कार
मि: शुल्क साइकिल वितरण योजना	⟷ कन्या समृद्धि योजना
	→ पद्मावती पुरस्कार

अतः उपरोक्त योजनाओं के माध्यम से स्त्री शिक्षा को बढ़ाया जा रहा है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
जन-जन में जागृति फैलाओ

BSER-165/2019

कुल पृष्ठ संख्या-24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) .....

.....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

.....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 14/3/2020

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक | | | | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

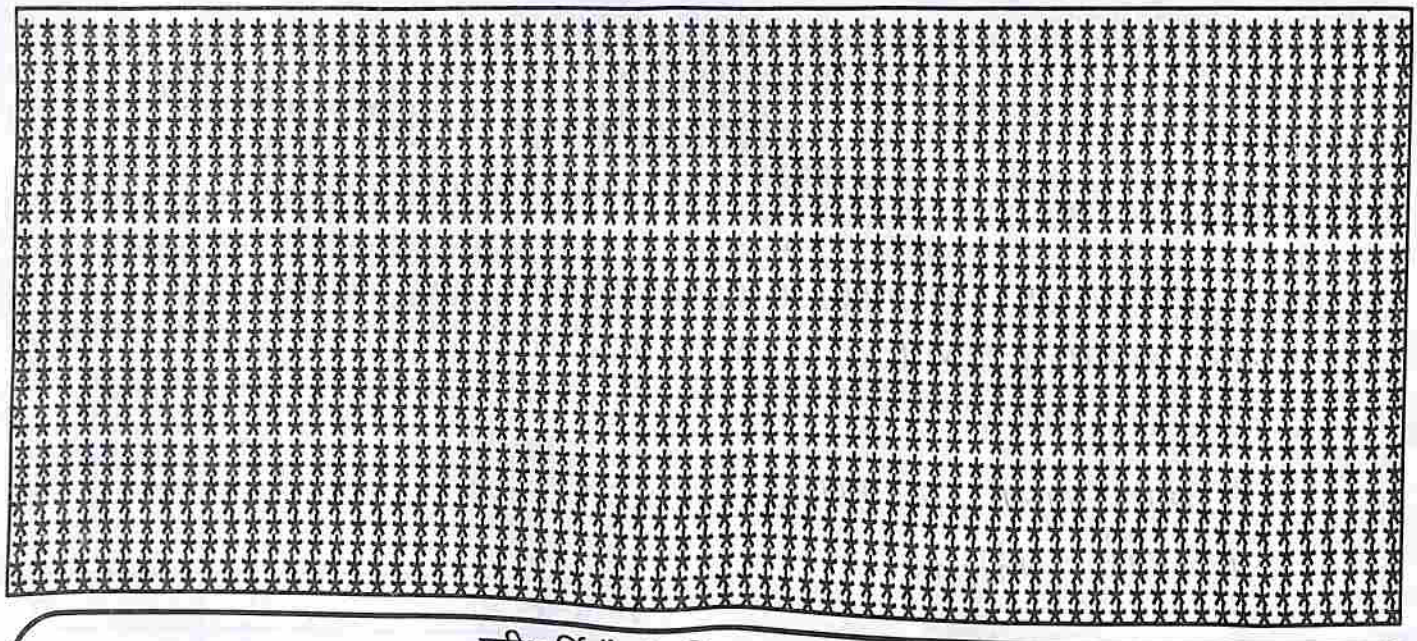

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ङ) उपसंहार → वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्त्री शिक्षा व बालिका जन्म की सार्थकता को देखकर हमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना में अपनी सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए व कन्या जन्म को अभिशाप न मानकर उसका प्रोत्साहन करना चाहिए।

30. शराब पीकर वाहन चलाने के दुष्परिणाम:

① ☞ शराब पीकर वाहन चलाने पर हमारे अनुमस्तिष्क पर बुरा असर पड़ता है।

② ☞ शराब पीकर वाहन चलाने पर हमारी संभजन क्षमता में कमी आती है, जिससे वाहन नियंत्रण में नहीं रख सकते हैं।

यदि हमारा कोई दोस्त या रिश्तेदार ऐसा करता है तो -

(i) → हम उसे ऐसा नहीं करने की सलाह देंगे।

(ii) → शराब पीकर वाहन चलाने के दुष्परिणाम बताएंगे।

(iii) → यदि वह नहीं मानते तो उन पर कठोर कार्यवाही करने की सूचना देंगे।

'समाप्त'

BSEB-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-167/2020

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

IISER-167/2020